संपादक का नोट

भजन संहिता 127:1 कहता है ''यदि घर को यहोवा न बनाए, तो उसके बनाने वालों को परिश्रम व्यर्थ होगा। यदि नगर की रक्षा यहोवा न करे, तो रखवाले का जागना व्यर्थ ही होगा।'' यह अकेले परमेश्वर है जो हमारे शहर को दृढ़ बना सकते है, हमें न ही धनी और अमीर लोगों की, न ही बलवान और बुद्धिमान लोगों की और न ही शक्तिशाली लोगों की जरूरत है; इसके बजाय, जब तक हमारे पास धर्मी लोग हैं, तब तक शत्रु हमारे शहरों को छू भी नहीं सकता है।

भजन संहिता 60:9 ''मुझे गढ़ वाले नगर में कौन पहुंचाएगा? एदोम तक मेरी अगुवाई किस ने की है?'' जब हम प्रभु के पंखों में सुरक्षित रहते हैं, तो वह हमें ढक के रखते है और वह हमारी छाया बनते है। भजन संहिता 91: 5–6 ''5 तू न रात के भय से डरेगा, और न उस तीर से जो दिन को उड़ता है, 6 न उस मरी से जो अन्धेरे में फैलती है, और न उस महारोग से जो दिन दुपहरी में उजाड़ता है।'' जब हम प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं, भले ही अन्य शहर नष्ट हो जाएं, हमारा दृढ़ शहर हमेशा के लिए जीवित रहेगा और इस दुनिया की कोई भी बीमारी, और न ही युद्ध, प्रभु के बच्चों को नुकसान पहुंचा सकती हैं। दुनिया के शहर नष्ट हो सकते हैं, लेकिन हम जो प्रभु का भय मानते हैं वह कभी नष्ट नहीं होंगे जब तक हमारे प्रभु यीशु मसीह के हाथ की मजबूत पकड़ हम पर होगी। भजन संहिता 121:6 ''न तो दिन को धूप से, और न रात को चांदनी से तेरी कुछ हानि होगी।'' चाहे वह दिन में झुलसानेवाली धूप हो या रात के समय चंद्रमा, कुछ भी हमें नुकसान नहीं पहुंचा सकता जब तक हमारा विश्वास हमारे प्रभु यीशु मसीह पर है। यह हमारा प्रभु यीशु मसीह है जो हमें दृढ़ शहर में ले जायेंगे।

एक शहर कैसे दृढ़ होता है? क्या यह अनुभवी, बुद्धिमान या धनवान पुरुषों के माध्यम से, या हमारे शक्तिशाली विश्व नेताओं के माध्यम से है? शहर को दृढ़ कौन बना सकता है? याद रखें, केवल धर्मी व्यक्ति ही किसी शहर को दृढ़ बना सकता है। परमेश्वर ने देखा कि सदोम और अमोरा शहर में पाप बहुत बढ़ गया था। इस संसार के पाप स्वर्ग तक पहुँच गया, और परमेश्वर पृथ्वी के मुख से इन शहरों को नष्ट करने के लिए नीचे आएं। उस समय, अब्राहम परमेश्वर और विनाश के दूत के बीच खड़ा था। जब एक धर्मी व्यक्ति कोई शहर को छोड़ता है, तो तुरंत शत्रु उस शहर में प्रवेश करता है और उसे नष्ट कर देता है। इस प्रकार, हमें याद रखना चाहिए कि केवल एक 'धर्मी' व्यक्ति ही शहर को दृढ़ बना सकता है। न तो कोई धनी या अमीर व्यक्ति, न ही कोई बुद्धिमान या शक्तिशाली व्यक्ति, बल्कि केवल एक 'धर्मी व्यक्ति' ही शहर को दृढ़ बना सकता है।

प्रेरितों के काम 16:31 ''उन्होंने कहा, प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा।'' मुक्ति का एकमात्र रास्ता ''यीशु मसीह'' है और वह अकेले ही हमें दृढ़ शहर में ले जा सकते है। लोगों द्वारा बनाए गए हर शहर को नष्ट कर दिया जाएगा। वचन कहता है रोमियों 10:13 में ''क्योंकि जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा।'' इसलिए जो कोई भी यीशु का नाम लेता है, वह बच जाएगा और अपना, 'उद्धार' प्राप्त कर लेगा, क्योंकि यीशु की इच्छा है कि एक भी आत्मा नहीं खोनी चाहिए; बल्कि, जो कोई भी प्रभु के नाम की प्रशंसा करता है वह बच जाएगा।

मेरे प्यारे भाइयों और बहनों, हमेशा परमेश्वर के जीवित वचन पर ध्यान दें और प्रभु की इच्छा के अनुसार अपने जीवन का प्रयास करें और नेतृत्व करें और आप अपनी आँखों से देखेंगे कि हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह आपके लिए क्या करेंगे।

जब तक हम फिर से मिलते हैं, तब तक आप सब लोग वचन में बढ़ते रहें।

पास्टर सरोजा म।

मूसा एक नम्र मनुष्य था।

व्यवस्थाविवरण 33: 29 ''हे इस्राएल, तू क्या ही धन्य है! हे यहोवा से उद्धार पाई हुई प्रजा, तेरे तुल्य कौन है? वह तो तेरी सहायता के लिये ढाल, और तेरे प्रताप के लिये तलवार है; तेरे शत्रु तुझे सराहेंगे, और तू उनके ऊंचे स्थानों को रौंदेगा।'' मूसा, परमेश्वर के सेवक ने इस्राएलियों को बुलाया और उन्हें अपना अंतिम आशीर्वाद दिया, क्योंकि परमेश्वर ने मूसा को बताया था कि इसराएलियों का अंत क्या होगा। मूसा का जन्म मिस्र के कोसन शहर में हुआ था और महल में फिरौन की बेटी द्वारा लाया गया था। आइए हम पढ़ें इब्रानियों 11: 25 ''इसलिये कि उसे पाप में थोड़े दिन के सुख भोगने से परमेश्वर के लोगों के साथ दुख भोगना और उत्तम लगा।'' हालाँकि मूसा को फिरौन के घर के सभी मूल्यों की शिक्षा दी गई थी, उसने फिरौन के घर में रहने का आनंद उठाया, फिर भी मूसा ने इस्राएल के बच्चों के साथ परेशानी भुगतना पसंद किया। आइए हम पढ़ते हैं प्रेरितों के काम 7: 22 ''और मूसा को मिसरियों की सारी विद्या पढ़ाई गई, और वह बातों और कामों में सामर्थी था।'' मूसा को मिस्रियों के ज्ञान में सिखाया गया था और वह शब्दों और कार्यों में पराक्रमी था। हम जानते हैं कि फिरौन ने मूसा को सबसे अच्छी शिक्षा प्रदान की और उसे मिस्रियों की सभी शिक्षाएँ दीं और इस तरह उसे मिस्रियों के ज्ञान में शक्तिशाली बना दिया। फिर भी, मूसा ने इन सब के बाद भी, इस्राएलियों के साथ दुःख उठाना बेहतर समझा। इब्रानियों 3: 2 कहता है ''जो अपने नियुक्त करने वाले के लिये विश्वास योग्य था, जैसा मूसा भी उसके सारे घर में था।'' परमेश्वर ने खुद मूसा की सच्चाई के बारे में गवाही दी। आइए हम पढ़ते हैं गिनती 12: 3 ''मूसा तो पृथ्वी भर के रहने वाले मनुष्यों से बहुत अधिक नम्र स्वभाव का था।'' मूसा इस पूरी पृथ्वी पर सभी पुरुषों की तुलना में विनम्र था। उसकी विनम्रता के कारण, प्रभु परमेश्वर मूसा से आमने–सामने बात करते थे। निर्गमन 33: 9 ''और जब मूसा उस तम्बू में प्रवेश करता था, तब बादल का खम्भा उतर के तम्बू के द्वार पर ठहर जाता था, और यहोवा मूसा से बातें करने लगता था।'' हमने मूसा की सच्चाई, सत्यता, विनम्रता और परमेश्वर से कितना प्यार किया, यह देखा है। इस प्रकार, उसने अपने लोगों, इस्राएलियों के साथ पीड़ित होना चुना। आइए नए नियम में मूसा के बारे में पढ़ें, पतरस ने मूसा के बारे में क्या कहा मत्ती 17: 1–4 ''1 छः दिन के बाद यीशु ने पतरस और याकूब और उसके भाई यूहन्ना को साथ लिया, और उन्हें एकान्त में किसी ऊंचे पहाड़ पर ले गया। 2 और उनके सामने उसका रूपान्तर हुआ और उसका मुंह सूर्य की नाईं चमका और उसका वस्त्र ज्योति की नाईं उजला हो गया। 3 और देखो, मूसा और एलिय्याह उसके साथ बातें करते हुए उन्हें दिखाई दिए। 4 इस पर पतरस ने यीशु से कहा, हे प्रभु, हमारा यहां रहना अच्छा है; इच्छा हो तो यहां तीन मण्डप

बनाऊं; एक तेरे लिये, एक मूसा के लिये, और एक एलिय्याह के लिये।'' पतरस को एहसास हुआ कि परमेश्वर, एलिय्याह और मूसा के साथ रहना कितना धन्य है। इस प्रकार, मूसा ने पूरी तरह से प्रभु परमेश्वर पर भरोसा किया, और यह कहकर इस्राएलियों को आशीर्वाद दिया, ''हे इस्राएल ! तुम्हारी तरह कौन है, लोग जो प्रभु द्वारा बचाये गए, आपकी मदद की ढाल और आपके ऐश्वर्य की तलवार !''

मूसा जानता था कि इस्राएली कितने धन्य थे और परमेश्वर ने उन्हें प्यार किया और आशीष भी दिया। इसके अलावा, इस्राएली कितने धन्य थे की वे प्रभु से आमने–सामने बात किया करते थे। आइए एक बार फिर से पढ़ें व्यवस्थाविवरण 33: 29 ''हे इस्राएल, तू क्या ही धन्य है! हे यहोवा से उद्धार पाई हुई प्रजा, तेरे तुल्य कौन है? वह तो तेरी सहायता के लिये ढाल, और तेरे प्रताप के लिये तलवार है; तेरे शत्रु तुझे सराहेंगे, और तू उनके ऊंचे स्थानों को रौंदेगा।'' प्रभु ने छह दिनों में दुनिया का निर्माण किया, लेकिन उन्होंने अपनी छवि में मनुष्य को बनाया और अपनी खुद की ही सांस दी। अंत में, प्रभु ने उन्हें आशीर्वाद दिया और उनके द्वारा बनाई गई सभी चीजों पर अधिकार दिया, उत्पत्ति 1: 28 ''और परमेश्वर ने उन को आशीष दी: और उन से कहा, फूलो–फलो, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो; और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगने वाले सब जन्तुओ पर अधिकार रखो।'' इस प्रकार, इस शास्त्र के माध्यम से हम जानते हैं कि पूरी दुनिया में इस्राएलियों के रूप में धन्य कोई जनजाति नहीं है। आइए हम पढ़ें रोमियों 9: 4 ''वे इस्त्राएली हैं; और लेपालकपन का हक और महिमा और वाचाएं और व्यवस्था और उपासना और प्रतिज्ञाएं उन्हीं की हैं।'' परमेश्वर द्वारा चुने गए इस्राएली निश्चित रूप से बहुत कीमती और विशेष सभा है। इस प्रकार, जब दाऊद ने गोलियत को देखा, तो उसने कहा 1 शमूएल 17: 26 में ''तब दाऊद ने उन पुरूषों से जो उसके आस पास खड़े थे पूछा, कि जो उस पलिश्ती को मार के इस्राएलियों की नामधराई दूर करेगा उसके लिये क्या किया जाएगा? वह खतनारहित पलिश्ती तो क्या है कि जीवित परमेश्वर की सेना को ललकारे?'' पुराने करार में, खतना किया जाना एक महत्वपूर्ण बात थी और जब से वे सभी प्रभु के लिए खतना किए गए थे, तब से इस्राएली सभी विशेष लोग हो गए थे। उन्होंने सभी के ऊपर अधिकार, शक्ति और वीरता प्राप्त की, प्रभु का प्यार, क्योंकि उनका खतना किया गया था। इस प्रकार दाऊद कहता हैं, ''यह अविवाहित फिलिस्तीन कौन है, कि उसे जीवित परमेश्वर की सेनाओं की अवहेलना करनी चाहिए।'' अब, नए करार में, हम सभी मसीह यीशु के साथ एक हो गए हैं, जो की अकेले उनके लहू से धोये और छुड़ाए गए है। इस प्रकार, आज एक बार फिर से परमेश्वर ने हमें इस्राएलियों के लिए व्यवस्थाविवरण में उनके प्रेम की याद दिला रहे है व्यवस्थाविवरण 33: 29 ''हे इस्राएल, तू क्या ही धन्य है! हे यहोवा से उद्धार पाई हुई प्रजा, तेरे तुल्य कौन है? वह तो तेरी सहायता के लिये ढाल, और तेरे प्रताप के लिये तलवार है; तेरे शत्रु तुझे सराहेंगे, और तू उनके ऊंचे स्थानों को रौंदेगा।'' यीशु मसीह ने हमें अपने पापों से मुक्ति दिलाने और हमें छुड़ाने के लिए अपना जीवन क्रूस पर बलिदान कर दिया। कई सदियों पहले परमेश्वर ने इस्राएलियों के बारे में जो रहस्योद्घाटन किया था, वही रहस्योद्घाटन पूरा करना था। इस प्रकार, प्रभु को हमें बचाने के लिए एक बार फिर अपने एकमात्र पुत्र यीशु मसीह को इस दुनिया में भेजना ही पड़ा। आज, हम एक इस्राएली और प्रभु के बच्चे होने का दावा कर सकते हैं, क्योंकि यीशु आज भी हमसे कहते हैं ''हे इस्राएल ! तुम्हारी तरह कौन है, लोग जो प्रभु द्वारा बचाये गए, आपकी मदद की ढाल और आपके ऐश्वर्य की तलवार !''

हम पवित्र शास्त्र में स्तिुफनुस की कहानी जानते हैं, वह एक चरवाहा या याजक या प्रेरित या उपदेशक नहीं था। वह केवल एक अभिषिक्त व्यक्ति था, जिसे परमेश्वर का कार्य करने के लिए चुना गया था। प्रेरितों के काम 6: 2, 5, 8,10 ''2 तब उन बारहों ने चेलों की मण्डली को अपने पास बुलाकर कहा, यह ठीक नहीं कि हम परमेश्वर का वचन छोड़कर खिलाने पिलाने की सेवा में रहें। 5 यह बात सारी मण्डली को अच्छी लगी, और उन्होंने स्तिुफनुस नाम एक पुरूष को जो विश्वास और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण था, और फिलेप्पुस और प्रखुरूस और नीकानोर और तीमोन और परिमनास और अन्ताकीवाला नीकुलाउस को जो यहूदी मत में आ गया था, चुन लिया। 8 स्तिुफनुस अनुग्रह और सामर्थ में परिपूर्ण होकर लोगों में बड़े बड़े अद्भुत काम और चिन्ह दिखाया करता था। 10 परन्तु उस ज्ञान और उस आत्मा का जिस से वह बातें करता था, वे सामना न कर सके।'' इस प्रकार, जब शिष्यों ने भीड़ को देखा तो उन्होंने यीशु से कहा कि ''यह हमारे लिए नहीं है कि हम लोगों की सेवा करें, हमें वचन का प्रचार करने के लिए चुना गया है''। इसलिए, शिष्यों ने ऐसे लोगों का एक समूह तैयार किया जो बहुसंख्यकों की सेवा में हो सकते हैं। इस प्रकार स्तिुफनुस को लोगों के लिए प्रभु की सेवा करने के लिए चुना गया था। वचन 5 ''यह बात सारी मण्डली को अच्छी लगी, और उन्होंने स्तिुफनुस नाम एक पुरूष को जो विश्वास और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण था, और फिलेप्पुस और प्रखुरूस और नीकानोर और तीमोन और परिमनास और अन्ताकीवाला नीकुलाउस को जो यहूदी मत में आ गया था, चुन लिया।'' वचन 5 कहता हैं कि स्तिुफनुस विश्वास में मजबूत था। वचन 8 कहता है ''8 स्तिुफनुस अनुग्रह और सामर्थ में परिपूर्ण होकर लोगों में बड़े बड़े अद्भुत काम और चिन्ह दिखाया करता था।'' वचन 10 में ''10 परन्तु उस ज्ञान और उस आत्मा का जिस से वह बातें करता था, वे सामना न कर सके।'' इस प्रकार, स्तिुफनुस को चेलों ने परमेश्वर के राज्य के काम करने के लिए चुना था। वह अभिषेक से भरा हुआ था और कई चमत्कार किया करता था। यह समझना हमारे लिए ज़रूरी है कि जब परमेश्वर हमें चुनते है तो हम धन्य पुरुष और महिलाएं हो जाते हैं, इस प्रकार मूसा कहता है

''हे इस्राएल ! तुम्हारी तरह कौन है, लोग जो प्रभु द्वारा बचाये गए, आपकी मदद की ढाल और आपके ऐश्वर्य की तलवार !'' पुराने नियम में, इस्राएलियों का खतना किया गया था, इस प्रकार वे धन्य थे। नए करार में, जो प्रभु मसीह के 'लहू' से धोए जाते हैं, वे धन्य हैं और उनका अभिषेक किया जाता है, उन्हें आज इस्राएलवासी कहा जाता है। क्योंकि परमेश्वर अपने लोगों को ऐसी बुद्धि और ज्ञान के साथ अभिषेक करते है कि कोई भी उनके सामने खड़ा नहीं हो सकता। जैसा कि हमने ऊपर देखा है जब शिष्यों ने यीशु से कहा कि ''हम लोगों का ध्यान नहीं रख सकते, उन्हें भोजन नहीं खिला सकते हैं और हमें उनकी सेवा करनी पड़ेगी। वचन प्रचार का हमारा काम रुक जाएगा।'' इस प्रकार, जब वे कुछ लोगों को चुनते थे और काम करने के लिए उनका अभिषेक करते थे, तो स्तिुफनुस को लोगों की सेवा के लिए चुना गया था। दिन–प्रतिदिन स्तिुफनुस ज्ञान और अभिषेक में बढ़ता गया और उसने प्रभु के लिए बड़े काम किए। जब परमेश्वर के बच्चे प्रभु की आत्मा से भर जाते हैं, तो वे बुद्धिमान हो जाते हैं। वह ज्ञान हमेशा प्रभु के नाम को ही बढ़ाएगा। स्तिुफनुस के जीवन में, हमने अंत तक देखा है कि वह प्रभु से प्यार करता था और अंत में उसे पत्थर मारके मौत के घाट उतार दिया गया, लेकिन ध्यान केवल प्रभु पर ही रहा। हमें यह याद रखना चाहिए कि जो लोग प्रभु द्वारा अभिषेक किये गयें हैं, उन्हें अंतिम सांस तक प्रभु के लिए जीना और मरना चाहिए। पवित्र शास्त्रों में हमने देखा है कि यीशु मसीह लोगों को खोजते हुए गए, उनके चमत्कारों को करने के लिए, चंगा करने और क्षमा करने के लिए गए थे। उदाहरण के लिए, एक अंधा लड़का था जिसका परिवार उसकी परवाह नहीं करता था। लेकिन यीशु मसीह

उसकी खोज में गए और उसे चंगा किया। नेत्रहीन लड़के की आंखों की रोशनी आने के बाद, उसके परिवार और दोस्तों ने उसके आगे पीछे घूमना शुरू कर दिया। क्योंकि, उस पर प्रभु की कृपा थी, उसके जीवन का अंदाज़ बेहतर के लिए बदल गया था। लोगों ने उसके चारों ओर कमर कस ली और उससे पूछा ''तुम्हें सब्त के दिन किसने चंगा किया था? आपके जीवन में इस काम को करने वाला कौन है?'' इसके लिए लड़का जवाब देता है ''मैं उसे नहीं जानता जिसने मुझे चंगा किया और मुझे आँख दी।'' परिवार और दोस्तों ने अंधे लड़के को बहुत परेशान किया और आखिरकार उसे मंदिर से बाहर निकाल दिया। यीशु एक बार फिर आये और उसे उठा लिया। अब लड़का फरीसियों और सदूकियों पर चिल्लाता है और कहता है कि ''प्रभु पापियों की प्रार्थना नहीं सुनते है'' और फिर लड़का उस जगह को छोड़कर वहां से चला गया। हमारे जीवन में भी, यह वही है, जब हम गलत रास्ते पर चलते हैं, दुनिया हमें छोड़ देगी। लेकिन, जिस समय प्रभु की कृपा हमारे ऊपर आती है और जब हमारा जीवन बेहतर हो जाता है, तो शत्रु हमें फिर से नष्ट करने के लिए हमारे पीछे लग जाता है। एक और उदाहरण, पवित्र शास्त्र में, यीशु को जानने वाला एक नेत्रहीन व्यक्ति अपनी राह से गुजर रहा था; यीशु से चिल्लाते हुए कहता है कि ''दाऊद के पुत्र हम पर दया कर''। यीशु ने उसकी आवाज़ सुनी और उसे रोक दिया और उसे चंगा किया। तुरंत, कूदते हुए, उछलते हुए, यीशु के पीछे और अपने परिवार को पीछे छोड़ते हुए मंदिर में प्रवेश किया। एक और उदाहरण, एक महिला के बारे में है जो महँगा इत्र लेकर आयी थी और यीशु के चरणों में संगमरमरी खड़िया पात्र तोड़ती है। और प्रभु के पैरों पर अभिषेक करती है। क्योंकि यीशु ने उसके जीवन में एक बड़ा चमत्कार किया था और उसे बंधन से छुड़ाया था। केवल वह ही अपने जीवन में परमेश्वर के पराक्रम कार्य को जानती थी। लेकिन उनके शिष्यों, जो कि समझदार थे, खुद के भीतर कुड़कुड़ाने लगे 'उसने यीशु के चरणों में इतना महंगा इत्र क्यों बर्बाद कर दिया, वही बेचा जा सकता था और हम गरीब लोगों को भोजन दे सकते थे?" इस पर यीशु ने उत्तर दिया ''गरीब हमेशा तुम्हारे साथ रहेंगे''। जब हमारे भीतर सच्ची आत्मा होगी, तो हम इस 'वचन' के सही अर्थ को समझेंगे।

प्रेरित पौलुस कहता है रोमियों 8: 31–34 ''31 उस ने कहा, जब तक कोई मुझे न समझाए तो मैं क्योंकर समझूं और उस ने फिलेप्पुस से बिनती की, कि चढ़कर मेरे पास बैठ। 32 पवित्र शास्त्र का जो अध्याय वह पढ़ रहा था, वह यह था; कि वह भेड़ की नाईं वध होने को पहुंचाया गया, और जैसा मेम्ना अपने ऊन कतरने वालों के सामने चुपचाप रहता है, वैसे ही उस ने भी अपना मुंह न खोला। 33 उस की दीनता में उसका न्याय होने नहीं पाया, और उसके समय के लोगों का वर्णन कौन करेगा, क्योंकि पृथ्वी से उसका प्राण उठाया जाता है। 34 इस पर खोजे ने फिलेप्पुस से पूछा; मैं तुझ से बिनती करता हूं, यह बता कि भविष्यद्वक्ता यह किस विषय में कहता है, अपने या किसी दूसरे के विषय में।'' वचन 33 कहता हैं ''33 उस की दीनता में उसका न्याय होने नहीं पाया, और उसके समय के लोगों का वर्णन कौन करेगा, क्योंकि पृथ्वी से उसका प्राण उठाया जाता है।'' ऐसा परमेश्वर जिसने हमारे लिए अपने इकलौते बेटे की कुर्बानी दे दी, क्या वह कभी हमारे जीवन में कोई कमी रखेंगे? लेकिन, जब हमारे पास कोई कमी होती है, तो हमें खुद से सवाल करना चाहिए? हमारे पास कमी क्यों है? हमारा परमेश्वर जो हमें काले कौवे के माध्यम से खिलाते है, क्या वह हमें नहीं खिलाएंगे? वचन कहता है कि ''हर पाप को माफ़ कर दिया जाएगा, लेकिन पवित्र आत्मा के खिलाफ पाप कभी भी माफ़ नहीं किया जाएगा''। पवित्र शास्त्र में, हम जानते हैं कि एक नबी की मृत्यु के बाद, उसकी पत्नी ने नबी एलीशा को पुकारा और कहा, ''आपका सेवक, मेरा पति मर चुका है और आप जानते हैं कि आपके सेवक को प्रभु का डर था। लेनदार मेरे दो बेटों को अपना दास बनाकर ले जाने के लिए आ रहे हैं ''। एलीशा ने तुरंत उससे पूछा

''तुम्हारे घर पर क्या है?'' इस पर उसने जवाब दिया ''घर पर थोड़ा सा तेल है''। यह परिवार के आशीर्वाद को लाने और उनके बंधन, दर्द, दुःख और कष्टों को दूर करने के लिए पर्याप्त था। क्या आज भी वही प्रभु हमारे साथ नहीं है? वह हमेशा हमारे प्रति जागरूक रहते है और वह हमारे हर दर्द और दुःख को जानते है। लेकिन, अगर आज हम पीड़ित हैं, तो हमें अपने जीवन की जांच करनी चाहिए कि हम क्यों पीड़ित हैं?

आइए पढ़ें भजन संहिता 91: 1 ''जो परमप्रधान के छाए हुए स्थान में बैठा रहे, वह सर्वशक्तिमान की छाया में ठिकाना पाएगा।'' अगर हम प्रभु परमेश्वर की छाया में हैं, तो ही वह हमारी ढाल बनेंगे और मुसीबत के समय मदद करेंगे। दाऊद कहता है भजन संहिता 18: 2 ''यहोवा मेरी चट्टान, और मेरा गढ़ और मेरा छुड़ाने वाला है; मेरा ईश्वर, मेरी चट्टान है, जिसका मैं शरणागत हूं, वह मेरी ढ़ाल और मेरी मुक्ति का सींग, और मेरा ऊँचा गढ़ है।'' हमें अपने जीवन की जाँच करनी चाहिए और देखना चाहिए कि क्या हम प्रभु का भय मानते हैं? क्या प्रभु का प्रेम हमारे भीतर है? क्या हम उनकी आज्ञाओं को मानते हैं और उनके नियमों को पालन करते हैं? हमें याद रखना चाहिए कि प्रभु हमें कभी नहीं छोड़ते हैं, बल्कि यह हम है कि उनका त्याग करते हैं। दाऊद कहता हैं, ''मैं एक छोटा बच्चा था, अब मैं बूढ़ा हो गया हूं, लेकिन मैंने कभी भी परमेश्वर के बच्चों को किसी भी चीज के लिए भीख मांगते नहीं देखा।'' जो प्रभु के शरण में रहते हैं, उन्हें कभी किसी चीज की कमी नहीं होगी। यीशु मसीह ने हमारे लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया ताकि हम शत्रु के बंधन से मुक्त हो जाएं, वह हमें शत्रु से जीत दिलाने के लिए मर गए। लेकिन वह विश्वास और भरोसा हमारे भीतर होना चाहिए। हमें याद रखना चाहिए, कि जब प्रभु के हाथ हम पर पड़ते हैं, तो हमें कोई नहीं बचा सकता है। शास्त्र याद रखें कि जब प्रभु का हाथ राजा शाऊल पर गिरा, तब शमूएल पूरी रात रोता रहा। लेकिन परमेश्वर ने शमूएल से बात की और कहा ''मैं शाऊल के पतन के लिए जिम्मेदार हूँ, तुम उसके लिए क्यों रोते हो? उठो और इसहाक के पुत्रों को अभिषेक करो'' हमें याद रखना चाहिए कि प्रभु केवल अपने लोगों को आशीर्वाद देने के लिए आए थे, लेकिन हमने खुद को ऐसी स्थिति में डाल दिया कि प्रभु भी हमारी मदद नहीं कर सकते। आइए हम पढ़ें उत्पत्ति 15: 1 '' इन बातों के पश्चात यहोवा को यह वचन दर्शन में अब्राम के पास पहुंचा, कि हे अब्राम, मत डर; तेरी ढाल और तेरा अत्यन्त बड़ा फल मैं हूं।'' परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा ''डरो मत, मैं तुम्हारी ढाल हूँ''। हमारे रूप में इतना धन्य कौन है? हमें हमेशा प्रभु के साथ एक जुट हो के रहने का प्रयास करना चाहिए। जिस तरह मूसा ने अपने राज्य में फिरौन की बेटी के साथ परिवार में खुशी से रहने के बजाय इस्राएलियों के साथ दुख भोगना बेहतर समझा। तलवार खुद से नहीं लड़ती है, उसे कवच से हटाना पड़ता है और तभी हम तलवार से लड़ सकते हैं। जब शैतान यीशु मसीह को परीक्षा करने आया, तो यीशु ने तलवार निकाली यानी के 'वचन और उसके साथ युद्ध किया'। याद रखें कि शत्रु को भी 'वचन' अच्छी तरह से पता है, लेकिन जब हम वचन में मजबूत होते हैं, जब शत्रु एक 'वचन' दिखाता है तो परमेश्वर के अभिषिक्त बच्चे 'दस दस वचन' दिखाएंगे। इस प्रकार, शत्रु वहाँ पराजित हो जाता है। आइए हम पढ़ें याकूब 4: 7 ''इसलिये परमेश्वर के आधीन हो जाओ; और शैतान का सामना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा।'' हां, हमें पहले अपने आप को प्रभु को सोपना चाहिए, उसके साथ जुड़ना चाहिए और फिर शैतान हमसे दूर भाग जाएगा। हम जानते हैं कि यीशु ने केवल दोधारी तलवार यानी वचन का इस्तेमाल किया था और शैतान का सामना किया था, इस प्रकार शैतान यीशु से पहले भाग गया था। हमें हमेशा आज्ञाकारी होना चाहिए और सबसे पहले परमेश्वर की इच्छा को पूरा करना चाहिए, तभी हम आत्मविश्वास से शत्रु का सामना कर सकते हैं। पवित्र शास्त्रों में, हम जानते हैं कि यहोशू ने यरीहो को पकड़ने के तरीके को स्वप्न में देखा। आइए हम पढ़ते हैं यहोशू 5: 13–14 ''13 जब यहोशू यरीहो

के पास था तब उसने अपनी आंखें उठाई, और क्या देखा, कि हाथ में नंगी तलवार लिये हुए एक पुरूष सामने खड़ा है; और यहोशू ने उसके पास जा कर पूछा, क्या तू हमारी ओर का है, वा हमारे बैरियों की ओर का? 14 उसने उत्तर दिया, कि नहीं; मैं यहोवा की सेना का प्रधान हो कर अभी आया हूं। तब यहोशू ने पृथ्वी पर मुंह के बल गिरकर दण्डवत किया, और उस से कहा, अपने दास के लिये मेरे प्रभु की क्या आज्ञा है?'' यहोशू ने स्वर्गदूत को एक तलवार के साथ खड़ा हुआ देखा, इसलिए यहोशू ने स्वर्गदूत से पूछा ''क्या आप हमारे लिए हैं, या हमारे विरोधी के लिए?'' हमें भी पहचानना चाहिए कि कौन प्रभु से है और कौन दुश्मन से। लेकिन जब यहोशू ने पहचाना कि यह स्वर्गदूत परमेश्वर का है, तो स्वर्गदूत ने जवाब दिया वचन ''14 उसने उत्तर दिया, कि नहीं; मैं यहोवा की सेना का प्रधान हो कर अभी आया हूं। तब यहोशू ने पृथ्वी पर मुंह के बल गिरकर दण्डवत किया, और उस से कहा, अपने दास के लिये मेरे प्रभु की क्या आज्ञा है?'' इस दुनिया में, दो समूह हैं, प्रभु और शैतान का समूह। प्रभु ने हमें वचन को अपने हाथों में दिया है, हम इसका उपयोग कैसे करते हैं, यह हमारे ऊपर है। हमें वचन को उसकी जड़ से जानना चाहिए न कि ऊपर–ऊपर से। आइए हम पढ़ें मत्ती 26: 7–11 ''7 तो एक स्त्री संगमरमर के पात्र में बहुमोल इत्र लेकर उसके पास आई, और जब वह भोजन करने बैठा था, तो उसके सिर पर उण्डेल दिया। 8 यह देखकर, उसके चेले रिसयाए और कहने लगे, इस का क्यों सत्यनाश किया गया?9 यह तो अच्छे दाम पर बिक कर कंगालों को बांटा जा सकता था। 10 यह जानकर यीशु ने उन से कहा, स्त्री को क्यों सताते हो? उस ने मेरे साथ भलाई की है। 11 कंगाल तुम्हारे साथ सदा रहते हैं, परन्तु मैं तुम्हारे साथ सदैव न रहूंगा।'' यीशु ने उनसे कहा ''गरीब हमेशा तुम्हारे बीच रहेंगे, लेकिन यीशु ने समझा और कहा वचन 10''यह जानकर यीशु ने उन से कहा, स्त्री को क्यों सताते हो? उस ने मेरे साथ भलाई की है।'' पास्टर कहते है कि जब वह चेन्नई शादी के लिए गए थे, तो उन्होंने एक पास्टर को शादी में एक वचन कहते हुए सुना मत्ती 10: 40 – 42 ''40 जो तुम्हें ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है; और जो मुझे ग्रहण करता है, वह मेरे भेजने वाले को ग्रहण करता है। 41 जो भविष्यद्वक्ता को भविष्यद्वक्ता जानकर ग्रहण करे, वह भविष्यद्वक्ता का बदला पाएगा; और जो धर्मी जानकर धर्मी को ग्रहण करे, वह धर्मी का बदला पाएगा। 42 जो कोई इन छोटों में से एक को चेला जानकर केवल एक कटोरा ठंडा पानी पिलाए, मैं तुम से सच कहता हूं, वह किसी रीति से अपना प्रतिफल न खोएगा।'' पास्टर इस वचन के विपरीत उपदेश दे रहे थे। वह समझा रहे थे कि ''यदि आप ऐसा नहीं करते हैं? आपका क्या होगा?'' यह जोड़े और पास्टर के परिवार के लिए एक आशीर्वाद का वचन था। उन्होंने समझाया कि परमेश्वर फिर से हमसे बात करने के लिए पृथ्वी पर नहीं आएंगे, बल्कि वह अपने वचन पास्टर, प्रचारकों और भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से ही बोलेंगे। इसलिए, आज, हमें कभी भी पास्टर, प्रचारकों और नबियों के बारे में बुरा नहीं सोचना चाहिए। हमें पास्टर, उनके परिवारों को प्यार और प्रोत्साहित करना चाहिए और उन्हें भी प्यार करना चाहिए। हमें यह याद रखना चाहिए कि भले ही हम उनके जीवन में योगदान न करें, प्रभु उन्हें कौवे के माध्यम से भी खिलाएंगे।

हमारा प्रभु एक ऐसा प्रभु है जो दस्तक देता है, वह कभी भी खुद को हमारे जीवन में जबरदस्ती नहीं लाता है। हमें हमेशा याद रखना चाहिए, कि प्रभु हमसे प्यार करता है और इस तरह एक छोटी सी सभा को चुना है ताकि वचन के द्वारा हमें ताड़ना आये और उनके वचन से हमें सलाह मिले। इसलिए, हमें अपना जीवन प्रभु के भय में जीना चाहिए, उनके कान हमेशा हमारे पुकार के लिए खुले रहते हैं। आइए पढ़ें मरकुस 8: 18–21 ''18 क्या तुम्हारा मन कठोर हो गया है? क्या आंखे रखते हुए भी नहीं देखते, और कान रखते हुए भी नहीं सुनते? और तुम्हें स्मरण नहीं। 19 कि जब मैं ने पांच हजार के लिये पांच रोटी तोड़ी थीं तो तुम ने टुकड़ों की कितनी

टोकिरयां भरकर उठाई? उन्होंने उस से कहा, बारह टोकरियां। 20 और जब चार हज़ार के लिये सात रोटी थीं तो तुमने टुकड़ों के कितने टोकरे भरकर उठाए थे? उन्होंने उससे कहा, सात टोकरे। 21 उस ने उन से कहा, क्या तुम अब तक नहीं समझते?'' ये ऐसे शक्तिशाली कार्य हैं जो प्रभु ने हमारे बीच किए हैं, फिर भी हम समझ नहीं पाते हैं। प्रभु ने हमें समझ, ज्ञान और उनका प्यार दिया है, फिर भी हमारा विश्वास दृढ़ नहीं है।

इब्रानियों 4: 12 ''इसलिये कि वे देखते हुए देखें और उन्हें सुझाई न पड़े और सुनते हुए सुनें भी और न समझें; ऐसा न हो कि वे फिरें, और क्षमा किए जाएं।'' हाँ यह आत्मा है जो हमें जीवन देती है, लेकिन हमारा शारीरिक जीवन कुछ भी नहीं है। जिस परमेश्वर की हम आराधना करते हैं वह 'धर्मी और पवित्र' है। प्रभु हमारे दुश्मनो को, खुद ही दुश्मन बना देंगे।

हमें दुश्मन से लड़ने की जरूरत ही नहीं है। आइए पढ़ें भजन संहिता 91: 8 ''परन्तु तू अपनी आंखों की दृष्टि करेगा और दुष्टों के अन्त को देखेगा।'' प्रभु हमारे दुश्मनों पर पतन लाएगा। भजन संहिता 44 : 5 ''तेरे सहारे से हम अपने द्रोहियों को ढकेलकर गिरा देंगे; तेरे नाम के प्रताप से हम अपने विरोधियों को रौंदेंगे।'' इस प्रकार, परमेश्वर हमसे बार–बार कहते है, हम चुने हुए हैं अर्थात् इस्राएली! लेकिन हम उनकी सारी कृपा और दया, बुद्धि और ज्ञान को भूल जाते हैं जो उन्होंने हमें आशीर्वाद दिया है। प्रभु ने उन लोगों को बहुत ताकत दी है जिनके पास विश्वास और भरोसा है। मलाकी 4: 3 ''तब तुम दुष्टों को लताड़ डालोगे, अर्थात मेरे उस ठहराए हुए दिन में वे तुम्हारे पांवों के नीचे की राख बन जाएंगे, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।'' हाँ, प्रभु हमारे पैरों के नीचे दुश्मन को राख बना देंगे। अंत में, आइए हम एक बार फिर से पढ़ें व्यवस्थाविवरण 33: 29 ''हे इस्राएल, तू क्या ही धन्य है! हे यहोवा से उद्धार पाई हुई प्रजा, तेरे तुल्य कौन है? वह तो तेरी सहायता के लिये ढाल, और तेरे प्रताप के लिये तलवार है; तेरे शत्रु तुझे सराहेंगे, और तू उनके ऊंचे स्थानों को रौंदेगा।'' मूसा को परमेश्वर द्वारा यह रहस्योद्घाटन दिया गया, इस प्रकार उसने इस्राएलियों को बुलाया और उन्हें अपना अंतिम आशीर्वाद दिया। हमें पहले प्रभु को, उनके प्यार, दया और कृपा को स्वीकार करना चाहिए, और फिर वह हमारे जीवन में सभी आशिषों को जोड़ देंगे। प्रभु ने हमारे भीतर अपनी खुद की सांस दी है, क्या वह कभी हमें छोड़ देंगे? हमें जीवन में कभी भी किसी को नीचे नहीं लाना चाहिए, बल्कि जब कोई व्यक्ति नीचे होता है, तो हमें उसे उठाना चाहिए। जब एक दलित व्यक्ति अपने जीवन को बेहतर बनाता है, तो हमें उस व्यक्ति का उत्साह बढ़ाना चाहिए न की उसे एक बार फिर कालकोठरी में खींचना चाहिए। हमें याद रखना चाहिए कि हम प्रभु के धन्य बच्चे हैं! हम सभी इस्राएली, प्रभु के चुने हुए पीढ़ी हैं। इस प्रकार, मूसा ने इस्राएलियों को बुलाया और उनसे कहा ''हे इस्राएल ! तुम्हारी तरह कौन है, लोग जो प्रभु द्वारा बचाये गए, आपकी मदद की ढाल और आपके ऐश्वर्य की तलवार !''

यह संदेश उन सभी के लिए एक आशीर्वाद हो जो इसे पढ़ते हैं! प्रभु की स्तुति हों !

पास्टर सरोजा म।